एयक्खेत्तोगाढं, सव्वपदेसेहिं कम्मणो जोग्गं ।
बंधदि सगहेदूहिं य, अणादियं सादियं उभयं ॥185॥

≈अन्वयार्थ – (एयक्खेत्तोगाढं) एकक्षेत्र में अवगाढरूप से स्थित (कम्मणो जोग्गं) कर्मरूप परिणमन के योग्य (अणादियं) अनादि (सादियं) सादि (उभयं) और उभयरूप जो पुद्गल द्रव्य है, उसे यह जीव (सगहेदूहिं) मिथ्यादर्शनादिक अपने-अपने निमित्त से (सव्वपदेसेहिं) सर्व आत्मप्रदेशों से (बंधदि) बांधता है ॥185॥

प्रदेश बंध

कर्मरूप पुद्गलों का आत्मप्रदेशों के साथ संश्लेष संबंध होना प्रदेशबंध कहलाता है ।

कौन	जीव
किसके द्वारा	अपने सर्व प्रदेशों के द्वारा
कहाँ स्थित	एकक्षेत्र में स्थित
किस वर्गणा को	कर्मरूप होने के योग्य (कार्मण वर्गणा)
कैसा पुद्गल द्रव्य	सादि, अनादि, अथवा उभयरूप पुद्गल द्रव्य को
किस निमित्त से	मिथ्यात्व आदि के निमित्त से
क्या करता है	बांधता है।

एयसरीरोगाहिय-मेयक्खेत्तं अणेयखेत्तं तु ।
अवसेसलोयखेत्तं, खेत्तणुसारिट्ठियं रूवी ॥186॥

≈अन्वयार्थ – (एयसरीरोगाहियं एयक्खेत्तं) एक शरीर की अवगाहना से रोका गया जो स्थान है वह एक क्षेत्र है ।

≈(तु) और (अवसेसलोयखेत्तं) शेष सर्वलोक का क्षेत्र (अणेयखेत्तं) अनेक क्षेत्र है ।

≈(खेत्तणुसारिट्ठियं रूवि) अपने-अपने क्षेत्र के अनुसार स्थित रूपी द्रव्य का प्रमाण है ॥186॥

osh.org

एकक्षेत्र, अनेक-क्षेत्र

नाम	एकक्षेत्र	अनेक-क्षेत्र
परिभाषा	एक जीव के शरीर की अवगाहनारूप क्षेत्र को एक-क्षेत्र कहते हैं ।	एकक्षेत्र को छोड़कर लोक का शेष सर्व क्षेत्र अनेक-क्षेत्र कहलाता है ।
क्षेत्र का प्रमाण	$\frac{\text{घनांगुल}}{\text{असंख्यात}}$ प्रमाण	लोक का असंख्यात बहुभाग अथवा लोक से कुछ कम ।

यद्यपि एक जीव की अवगाहना संख्यात घनांगुल भी होती है, तथापि बहुत जीवों की अवगाहना $\frac{\text{घनांगुल}}{\text{असंख्यात}}$ है, इसलिए एकक्षेत्र का प्रमाण इतना ही ग्रहण किया है ।

www.jainkosh.org

एक-अनेक-क्षेत्र में स्थित पुद्गल द्रव्य

सर्व लोक में अनंत पुद्गल द्रव्य हैं,
तो एकक्षेत्र में कितने पुद्गल हैं ?

$$\frac{१६\,ख}{\equiv} \times \frac{घनांगुल}{असंख्यात} = \frac{१६\,ख}{असंख्यात}$$

अर्थात् सर्व पुद्गलों का असंख्यातवाँ भाग एकक्षेत्र में है और असंख्यात बहुभाग अनेक-क्षेत्र में है ।

सर्व पुद्गलों का असंख्यातवाँ भाग भी अनंत पुद्गल द्रव्यरूप है । $\frac{१६\,ख}{असंख्यात}$ = अनंत

एकक्षेत्र, अनेक-क्षेत्र स्थित पुद्गल द्रव्य

सर्व लोक में स्थित
पुद्गल द्रव्य

जहाँ 1 जीव है वह
एकक्षेत्र स्थित पुद्गल द्रव्य

शेष सर्व स्थान स्थित
पुद्गल – अनेक-क्षेत्र
स्थित पुद्गल द्रव्य

www.JainKosh.org

एयाणेयक्खेत्तट्ठियरूवि अणंतिमं हवे जोग्गं ।
अवसेसं तु अजोग्गं, सादि अणादी हवे तत्थ ॥187॥

≈अन्वयार्थ – (एयाणेयखेत्तट्ठियरूवि अणंतिमं) एक और अनेक क्षेत्रों में ठहरे हुए रूपी द्रव्य में से अनंतवाँ भागरूप द्रव्य (जोग्गं) कर्मरूप होने के योग्य है ।

≈(तु) और (अवसेसं) शेष अनन्तबहुभाग प्रमाण द्रव्य (अजोग्गं) कर्मरूप होने के अयोग्य है ।

≈(तत्थ) इन सब एक-एक भेदों में भी (सादि अणादी) सादि द्रव्य और अनादि द्रव्य (हवे) हैं ॥187॥

www.JainKosh.org

अयोग्य-योग्य पुद्गल द्रव्य

योग्य पुद्गल द्रव्य

- जो कर्मरूप परिणमने योग्य है अर्थात् कार्मण वर्गणा

अयोग्य पुद्गल द्रव्य

- जो कर्मरूप होने अयोग्य है अर्थात् कार्मण वर्गणा को छोड़कर अन्य प्रकार की वर्गणाएँ

www.JainKosh.org

योग्य-अयोग्य द्रव्य का प्रमाण

एकक्षेत्र स्थित द्रव्य		अनेक-क्षेत्र स्थित द्रव्य	
योग्य	अयोग्य	योग्य	अयोग्य
अनंतवाँ भाग	अनंत बहुभाग	अनंतवाँ भाग	अनंत बहुभाग

www.JainKosh.org

जेट्ठे समयपबद्धे, अतीतकालाहदेण सव्वेण ।
जीवेण हदे सव्वं, सादी होदित्ति णिद्दिट्ठं ॥188॥

≈अन्वयार्थ – (जेट्ठे समयपबद्धे) उत्कृष्ट समयप्रबद्ध को (अतीतकालाहदेण) अतीत काल से गुणित (सव्वेण जीवेण) सर्व जीवराशि से (हदे) गुणा करने पर जो प्रमाण प्राप्त होवे वह (सव्वं सादी) सर्वसादि द्रव्य का प्रमाण (होदित्ति) है – ऐसा (णिद्दिट्ठं) जिनेन्द्र भगवान् ने कहा है ॥188॥

सादि-अनादि द्रव्य

सादि द्रव्य

- जो अतीत काल में जीव के द्वारा ग्रहण किया गया है ।

अनादि द्रव्य

- जो अनादि से कभी भी जीव के द्वारा ग्रहण नहीं किया गया ।

www.JainKosh.org

कुल सादि द्रव्य का प्रमाण

उत्कृष्ट समयप्रबद्ध = समयप्रबद्ध × असंख्यात

उत्कृष्ट समयप्रबद्ध ग्रहण करने के लिए असंख्यात से गुणा किया ।

एक समय में 1 जीव द्वारा ग्रहण द्रव्य = समयप्रबद्ध × असंख्यात

सर्व अतीत काल में एक जीव द्वारा ग्रहण द्रव्य = समयप्रबद्ध × असंख्यात × अतीत काल

सर्व जीवों द्वारा ग्रहण द्रव्य = समयप्रबद्ध × असंख्यात × अतीत काल × १६

यह सर्व पुद्गलों का अनंतवाँ भाग है ।

www.JainKosh.org

कुल अनादि द्रव्य का प्रमाण

अनादि द्रव्य = सर्व पुद्गल द्रव्य – सादि द्रव्य

१६ ख – (समयप्रबद्ध × असंख्यात × अतीत काल × १६)

यह सर्व पुद्गलों का अनंत बहुभाग है ।

याने सर्वत्र सादि द्रव्य निकालने हेतु अपने-अपने द्रव्य में अनंत का भाग लगाना । एक भाग सादि द्रव्य, शेष बहुभाग अनादि द्रव्य होता है ।

www.JainKosh.org

सगसगखेत्तगयस्स य, अणतिमं जोग्गदव्वगयसादी ।
सेसं अजोग्गसंगय-सादी होदित्ति णिद्दिट्ठं ॥189॥

≈अन्वयार्थ - (सगसगखेत्तगयस्स) अपने-अपने एक, अनेक क्षेत्र में स्थित सादिद्रव्य में से (अणंतिमं) अनन्तवें भाग (जोग्गदव्वगयसादी) अपना-अपना योग्य सादिद्रव्य है (य) और (सेसं) शेष अनन्तबहुभाग (अजोग्गसंगयसादी) अयोग्य सादिद्रव्य (होदित्ति) है – ऐसा (णिद्दिट्ठं) सर्वज्ञ भगवान ने कहा है ॥189॥

एकक्षेत्र स्थित द्रव्य ($\frac{\text{१६ ख}}{\text{असंख्यात}}$)

योग्य ($\frac{\text{१६ ख}}{\partial\ \text{ख}}$)		अयोग्य ($\frac{\text{१६ ख} \times (\text{ख} - 1)}{\partial\ \text{ख}}$)	
सादि	अनादि	सादि	अनादि
$\frac{\text{१६ ख}}{\partial\ \text{ख ख}}$	$\frac{\text{१६ ख} \times (\text{ख} - 1)}{\partial\ \text{ख ख}}$	अनंतवां एक भाग	अनंत बहुभाग

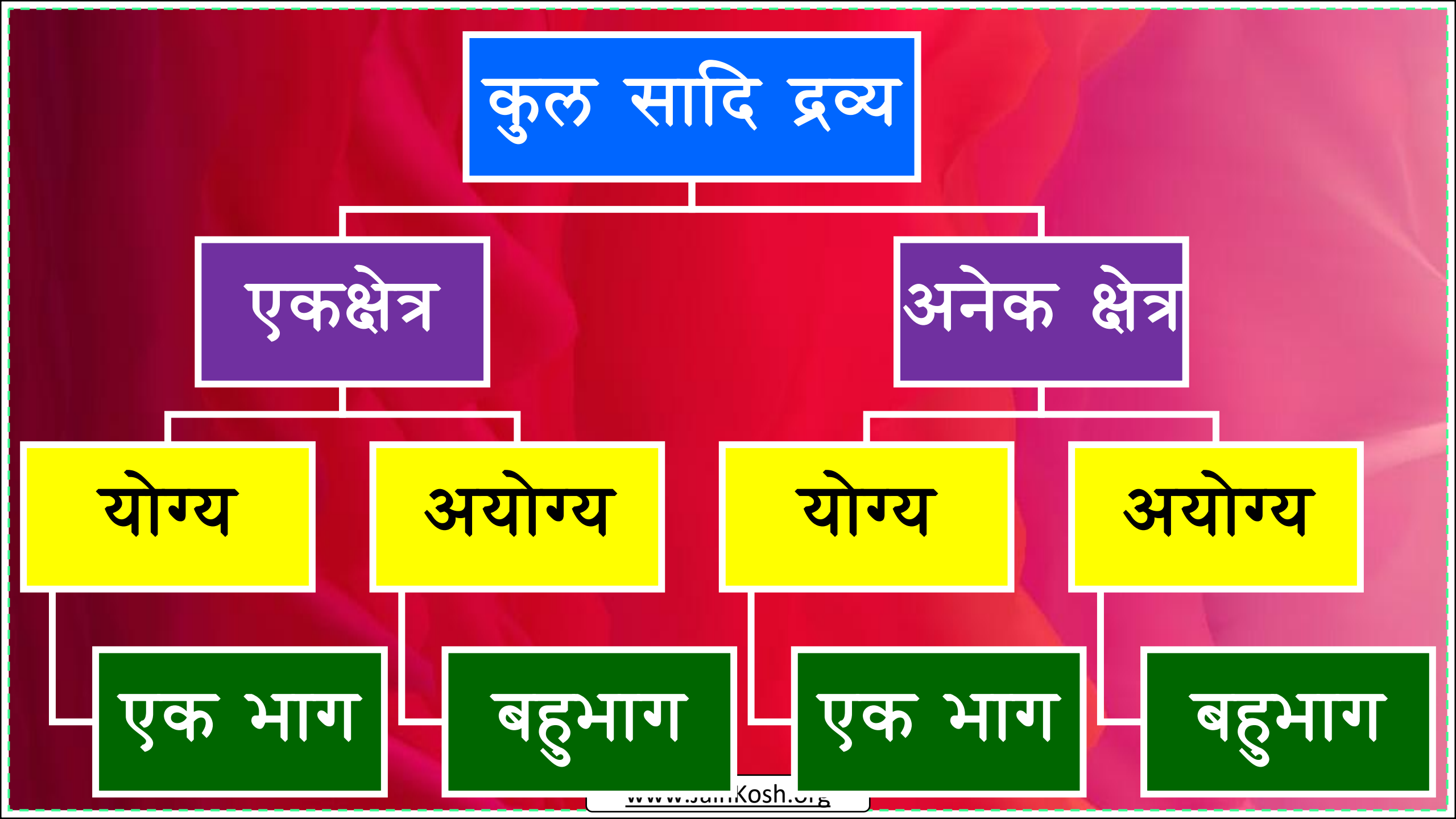
कुल सादि द्रव्य
एकक्षेत्र
अनेक क्षेत्र
योग्य
अयोग्य
योग्य
अयोग्य
एक भाग
बहुभाग
एक भाग
बहुभाग

सगसगसादिविहीणे, जोग्गाजोग्गे य होदि णियमेण ।
जोग्गाजोग्गाणं पुण, अणादिदव्वाण परिमाणं ॥190॥

≈अन्वयार्थ – (जोग्गाजोग्गे) एकक्षेत्र में और अनेक क्षेत्र में स्थित सर्व योग्य द्रव्य और अयोग्य द्रव्य में से (सगसगसादिविहीणे) अपने-अपने सादि द्रव्य का प्रमाण घटाने पर (णियमेण) नियम से (जोग्गाजोग्गाणं पुण अणादिदव्वाण) अपने अपने योग्य और अयोग्य अनादि द्रव्यों का (परिमाणं) प्रमाण आता है ॥190॥

उदाहरण — माना कि कुल पुद्गल द्रव्य = 64000 । लोक के प्रदेश = 64 । एकक्षेत्र = 4 प्रदेश ।

पुद्गल द्रव्य (64000)

एकक्षेत्र (64000/64 × 4) = 4000		अनेक-क्षेत्र (60000)	
योग्य 1000	**अयोग्य 3000**	**योग्य (15000)**	**अयोग्य (45000)**
सादि (200)	अनादि (800)	सादि (600)	अनादि (2400)
सादि (3000)	अनादि (12000)	सादि (9000)	अनादि (36000)

सर्व सादि द्रव्य = 200 + 600 + 3000 + 9000 = 12800

शेष अनादि द्रव्य = 64000 – 12800 = 51200

सयलरसरूवगंधेहिं, परिणदं चरमचदुहिं फासेहिं ।
सिद्धादो अभव्वादोऽणंतिमभागं गुणं दव्वं ॥191॥

≈अन्वयार्थ – (सयलरसरूवगंधेहिं) सर्व रस, सर्व रूप, सर्व गन्धों से तथा (चरिमचदुहिं फासेहिं) अन्तिम चार स्पर्शों से (परिणदं) परिणत और (सिद्धादो अणंतिमभागं) सिद्धों के अनन्तवें भागप्रमाण तथा (अभव्वादोऽणंतिम गुणं) अभव्यों से अनन्तगुणा (दव्वं) द्रव्य समयप्रबद्धरूप पुद्गल परमाणुओं का प्रमाण जानना ॥191॥

www.JainKosh.org

समयप्रबद्ध

स्वरूप	5 वर्ण, 2 गंध, 5 रस, शीत-उष्ण, स्निग्ध-रुक्ष से परिणत
प्रमाण	$\frac{\text{सिद्ध राशि}}{\text{अनंत}}$ अथवा अभव्य राशि × अनंत
परिभाषा	समय-समय प्रति बध्यते इति समयप्रबद्धं । जो प्रत्येक समय जीव के साथ बंधता है, उसे समयप्रबद्ध कहते हैं ।

आउगभागो थोवो, णामागोदे समो तदो अहियो ।
घादितिये वि य तत्तो, मोहे तत्तो तदो तदिये ॥192॥

≈अन्वयार्थ – (आउगभागो थोवो) आयुकर्म का भाग सब से कम है।

≈(णामागोदे समो) नाम व गोत्रकर्म का भाग आपस में समान है तो भी (तदो अहियो) आयुकर्म के भाग से अधिक है ।

≈(तत्तो) उससे (घादितिये वि) तीन घातिया कर्मों का भाग आपस में समान होते हुए भी अधिक है ।

≈(तत्तो) उससे (मोहे) मोहनीय कर्म का भाग अधिक है ।

≈(तदो) उससे (तदिये) वेदनीय कर्म का भाग अधिक है ॥192॥

www.JainKosh.org

1 समयप्रबद्ध में से कर्मों का बँटवारा

कर्म	द्रव्य का प्रमाण
आयु	स्तोक
नाम, गोत्र	परस्पर समान, पूर्व से अधिक
ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय	परस्पर समान, पूर्व से अधिक
मोहनीय	पूर्व से अधिक
वेदनीय	पूर्व से अधिक

www.JainKosh.org

जहाँ जितने कर्मों का बंध होता है,
वहाँ उतने कर्मों में बँटवारा होता है।

गुणस्थान	बध्यमान मूलकर्म
1, 2, 4, 5, 6, 7	7 कर्म, 8 कर्म
3	7 कर्म (आयु को छोड़कर)
8, 9	7 कर्म (आयु को छोड़कर)
10	6 कर्म (आयु, मोहनीय को छोड़कर)
11, 12, 13	1 कर्म (वेदनीय)

www.JainKosh.org

सुहदुक्खणिमित्तादो, बहुणिज्जरगोत्ति वेयणीयस्स ।
सव्वेहिंतो बहुगं, दव्वं होदित्ति णिद्दिट्ठं ॥193॥

≈अन्वयार्थ – (वेयणीयस्स) वेदनीय कर्म (सुहदुक्खणिमित्तादो) सुख और दुःख में निमित्त होने से (बहुणिज्जरगोत्ति) उसकी निर्जरा बहुत होती है।

≈इसलिये (सव्वेहिंतो) अन्य सब कर्मों से वेदनीय को (बहुगं दव्वं) बहुत द्रव्य (होदित्ति) मिलता है – ऐसा (णिद्दिट्ठं) जिनेन्द्र भगवान ने कहा है ॥193॥

सेसाणं पयडीणं, ठिदिपडिभागेण होदि दव्वं तु ।
आवलिअसंखभागो, पडिभागो होदि णियमेण ॥194॥

≈अन्वयार्थ - (सेसाणं पयडीणं) वेदनीय के बिना शेष सब मूल प्रकृतियों का (दव्वं) द्रव्य (ठिदिपडिभागेण) स्थिति के प्रतिभाग के अनुसार (होदि) होता है अर्थात् जिनकी स्थिति अधिक है उनको अधिक तथा जिनकी स्थिति कम है उनको कम हिस्सा मिलता है ।

≈(पडिभागो) इसका विभाग करने में प्रतिभागहार (णियमेण) नियम से (आवलिअसंखभागो) आवलि के असंख्यातवें भाग प्रमाण (होदि) होता है ॥194॥

विभाग का कारण

वेदनीय कर्म सुख-दुःख का कारण है । अतः इसकी निर्जरा बहुत होती है । इसलिए इसका द्रव्य सबसे अधिक प्राप्त होता है ।

शेष कर्मों का अपने स्थिति के अनुसार विभाग होता है ।

जिसकी स्थिति अल्प, उसे द्रव्य अल्प मिलता है ।

जिसकी स्थिति अधिक, उसे द्रव्य अधिक मिलता है ।

अधिक का प्रमाण लाने के लिए प्रतिभाग का प्रमाण = $\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}$

बहुभागे समभागो, अट्ठण्हं होदि एक्कभागम्हि ।
उत्तकमो तत्थवि बहुभागो बहुगस्स देयो दु ॥195॥

≈अन्वयार्थ - (बहुभागे) बहुभाग में (समभागो) आठ समान भाग करके (अट्ठण्हं) आठ प्रकृतियों को एक-एक भाग (होदि) देना होता है।

≈(एक्कभागम्हि) शेष एक भाग रहा (उत्तकमो) उसको पूर्वोक्त क्रम से देना (दु) किन्तु उसमें भी (बहुगस्स) जिसका बहुत द्रव्य हो उसको (बहुभागे) बहुभाग (देओ) देना चाहिये ॥195॥

www.JainKosh.org

विभाग का विधान

समयप्रबद्ध = 75000

$\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} = 5$

$\frac{\text{समयप्रबद्ध}}{\text{प्रतिभाग}} =$ एकभाग	$\frac{75000}{5} = 15000$
शेष द्रव्य = बहुभाग	60000
समभाग = $\frac{\text{बहुभाग}}{\text{बध्यमान कर्म}}$	$\frac{60000}{8} = 7500$
$\frac{\text{शेष एकभाग}}{\text{प्रतिभाग}} =$ एकभाग	$\frac{15000}{5} = 3000$
शेष भाग = बहुभाग इसे वेदनीय में दिया जाएगा	12000
$\frac{\text{शेष एकभाग}}{\text{प्रतिभाग}}$	$\frac{3000}{5} = 600$
शेष भाग = बहुभाग इसे मोहनीय में दिया जायेगा	2400

विभाग का विधान

समयप्रबद्ध = 75000

$\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} = 5$

$\frac{\text{शेष एकभाग}}{\text{प्रतिभाग}}$	$\frac{600}{5} = 120$
शेषभाग = बहुभाग इसे ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय में समानरूप से दिया जायेगा ।	480 $\frac{480}{3} = 160$ प्रत्येक को 160, 160, 160
$\frac{\text{शेष एकभाग}}{\text{प्रतिभाग}}$	$\frac{120}{5} = 24$
शेष भाग = बहुभाग इसे नाम, गोत्र में समानरूप से दिया जायेगा ।	96 $\frac{96}{2} = 48$ प्रत्येक को 48, 48
शेष एक भाग द्रव्य आयु को	24

अंक संदृष्टि:
समयप्रबद्ध का विभाग

	वेदनीय	मोहनीय	ज्ञानावरण	दर्शनावरण	अंतराय	नाम	गोत्र	आयु
समभाग	7500	7500	7500	7500	7500	7500	7500	7500
प्रतिभाग	12000	2400	160	160	160	48	48	24
कुल	19500	9900	7660	7660	7660	7548	7548	7524

नोट – यहाँ प्रतिभागरूप द्रव्य अधिक दिखाई दे रहा है, पर वास्तविक गणित में वह बहुत अल्प होता है ।

www.JainKosh.org

उत्तरपयडीसु पुणो, मोहावरणा हवंति हीणकमा ।
अहियकमा पुण णामा, विग्घा य ण भंजणं सेसे ॥196॥

≈ अन्वयार्थ – (उत्तरपयडीसु पुणो) उत्तर प्रकृतियों में (मोहावरणा) मोहनीय, ज्ञानावरण और दर्शनावरण ये तो (हीणकमा) हीनक्रम (हवंति) होते हैं अर्थात् इनकी उत्तर प्रकृतियों में क्रम से घटता घटता द्रव्य दिया जाता है।

≈ (पुण) पुनः (णामा विग्घा) नाम और अन्तराय कर्म (अहियकमा) अधिकक्रम हैं अर्थात् इनके भेदों में क्रम से अधिक-अधिक द्रव्य दिया जाता है ।

≈ (सेसे) अन्य कर्म की प्रकृतियों में (भंजणं ण) विभाग नहीं होता ॥196॥

उत्तर प्रकृतियों में विभाग का क्रम

प्रकृति	क्रम
ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय	हीन-हीन द्रव्य
नाम, अंतराय	अधिक-अधिक द्रव्य
वेदनीय, आयु, गोत्र	बँटवारा नहीं क्योंकि एक काल में 1 ही उत्तर प्रकृति का बंध होता है ।

मतिज्ञानावरण > श्रुतज्ञानावरण > अवधिज्ञानावरण > मन:पर्यय ज्ञानावरण > केवलज्ञानावरण

www.JainKosh.org

सव्वावरणं दव्वं, अणंतभागो दु मूलपयडीणं ।
सेसा अणंतभागा, देसावरणं हवे दव्वं ॥197॥

≈अन्वयार्थ – (मूलपयडीणं) मूल प्रकृतियों का (अणंतभागो दु) अनंतवाँ भाग प्रमाण (दव्वं) द्रव्य (सव्वावरणं) सर्वघाति है।

≈(सेसा अणंतभागा) शेष अनंतबहुभाग प्रमाण (दव्वं) द्रव्य (देसावरणं) देशघाति (हवे) है ॥197॥

www.JainKosh.org

घाति कर्म में विभाग

- सर्वघाती द्रव्य — अनंतवाँ भाग
- देशघाती द्रव्य — अनंत बहुभाग

जो ज्ञानावरण का समयप्रबद्ध का प्रमाण है, उसे अनंत का भाग देने पर

एकभाग — सर्वघाती परमाणु

बहुभाग — देशघाती परमाणु

इसी प्रकार दर्शनावरण, मोहनीय पर भी लगाना ।

www.JainKosh.org

सर्वघाती, देशघाती प्रकृतियों में द्रव्य

देशघाती प्रकृतियों में देशघाती और सर्वघाती दोनों प्रकार के स्पर्धक हैं ।

सर्वघाती प्रकृतियों को मात्र सर्वघाती द्रव्य में से ही द्रव्य मिलेगा ।

अत: देशघाती प्रकृतियों को दोनों द्रव्यों में से द्रव्य प्राप्त होगा ।

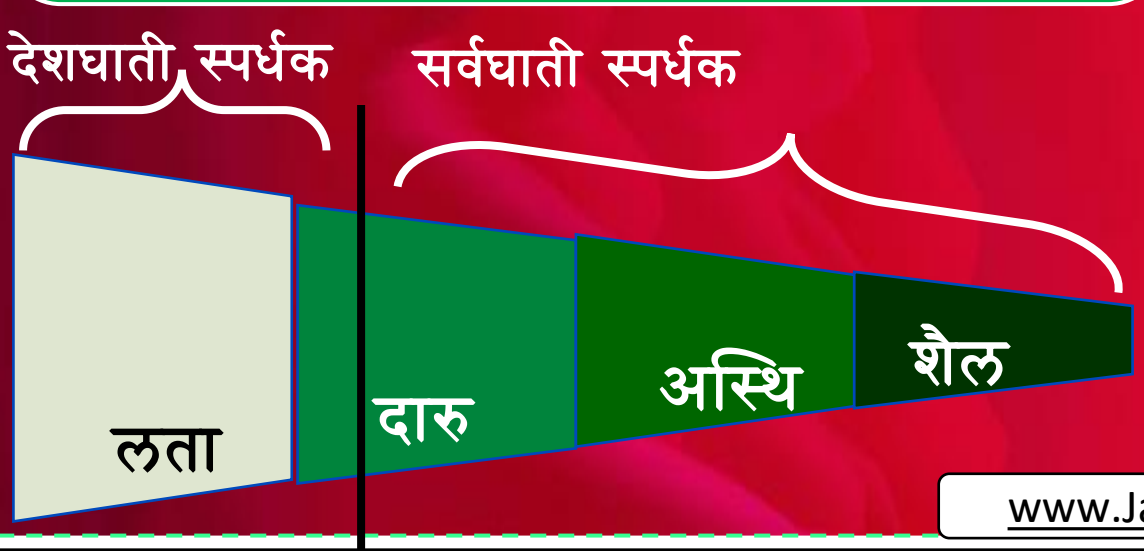

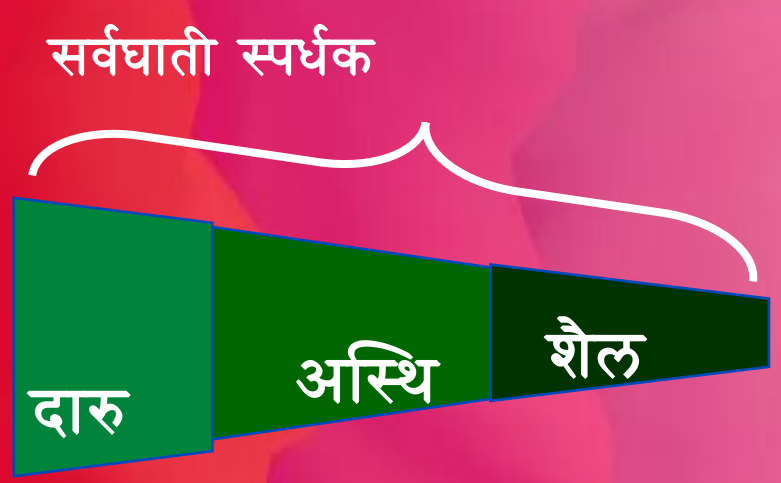

www.JainKosh.org

देसावरणण्णोण्णब्भत्थं तु अणंतसंखमेत्तं खु ।
सव्वावरणधणट्ठं, पडिभागो होदि घादीणं ॥198॥

≈अन्वयार्थ – (देसावरणण्णोण्णब्भत्थं) देशघाति प्रकृतियों की अन्योन्याभ्यस्त राशि (अनंत-संखमेत्तं खु) अनंत संख्याप्रमाण है। वह (घादीणं) घाति प्रकृतियों का (सव्वावरणधणट्ठं) सर्वघाति द्रव्य लाने के लिये (पडिभागो) भागहार का प्रमाण (होदि) है ॥198॥

www.JainKosh.org

प्रतिभाग का प्रमाण

सर्वघाती और देशघाती द्रव्य में अनुभाग की अपेक्षा अनंत गुणहानियाँ होती हैं ।

सर्वघाती द्रव्य की गुणहानियाँ अनंत हैं, जो शैल से दारु के अनंत बहुभाग तक हैं ।

देशघाती द्रव्य की गुणहानियाँ अनंत हैं, जो दारु के अनंतवें भाग से लता तक हैं ।

देशघाती द्रव्य की गुणहानियों की अन्योन्याभ्यस्त राशि ही सर्वघाती प्रकृतियों के द्रव्य प्रमाण को निकालने के लिये प्रतिभाग का प्रमाण है ।

$$\text{ज्ञानावरण का सर्वघाती द्रव्य} = \frac{\text{सर्व ज्ञानावरण द्रव्य}}{\text{देशघाती की अन्योन्याभ्यस्त राशि}}$$

$$\text{अन्योन्याभ्यस्त राशि} = 2^{\text{नाना गुणहानि}}$$

≈उदाहरण में सर्वद्रव्य = 6300, देशघाती की गुणहानि = 2, सर्वघाती की गुणहानि = 4 ।

≈सर्व सर्वघाती का द्रव्य = 100 + 200 + 400 + 800 = 1500

≈यह पूरा निकालने हेतु = $\frac{\text{सर्वद्रव्य}}{\text{देशघाती की अन्योन्याभ्यस्त राशि}}$

≈= $\frac{6300}{2^2}$ = $\frac{6300}{4}$ = लगभग 1500

www.JainKosh.org

अनुभाग में समयप्रबद्ध का बँटवारा - उदाहरण

सर्व द्रव्य = 6300
नाना गुणहानि = 6

www.JainKosh.org

सव्वावरणं दव्वं, विभज्जणिज्जं तु उभयपयडीसु ।
देसावरणं दव्वं, देसावरणेसु णेविदरे ॥199॥

≈अन्वयार्थ – (सव्वावरणं दव्वं) सर्वघाति द्रव्य (उभयपयडीसु) सर्वघाति और देशघाति दोनों प्रकृतियों में (विभज्जणिज्जं) विभाग करके देना चाहिए ।

≈(तु) किन्तु (देसावरणं दव्वं) देशघाति द्रव्य (देसावरणेसु) देशघाति प्रकृतियों में ही देना चाहिए; (णेविदरे) इतर सर्वघातिया प्रकृतियों में नहीं ॥199॥

www.JainKosh.org

सर्वघाती द्रव्य

- सर्वघाती प्रकृति
- देशघाती प्रकृति

देशघाती द्रव्य

- देशघाती प्रकृति

सर्वघाती प्रकृतियों में देशघाती स्पर्धक पाये ही नहीं जाते, इसलिए उनमें देशघाती में से द्रव्य नहीं मिलता है ।

देशघाती प्रकृतियों में दोनों प्रकार के स्पर्धक हैं । इसलिए उनमें दोनों द्रव्यों में से द्रव्य मिलता है ।

बहुभागे समभागो, बंधाणं होदि एक्कभागम्हि ।
उत्तकमो तत्थवि बहुभागो बहुगस्स देओ दु ॥200॥

≈अन्वयार्थ - (बंधाणं) एक साथ बंधने वाली उत्तर प्रकृतियों में (बहुभागे समभागो) बहुभाग के समान भाग करके देना चाहिए ।

≈(एक्कभागम्हि) शेष एक भाग में से (उत्तकमो) ऊपर बताये क्रमानुसार देना चाहिये ।

≈(तत्थवि) उसमें भी (बहुगस्स) जिसका बहुत द्रव्य कहा हो उसे (बहुभागो) बहुभाग (देओ दु) देना चाहिए ॥200॥

www.JainKosh.org

उत्तर प्रकृतियों में द्रव्य का विभाग

उत्तर प्रकृतियों में द्रव्य के विभाग का प्रकार मूल प्रकृतिवत् ही है । अर्थात् एक भाग अलग रखकर बहुभाग के समान हिस्से करना ।

शेष एक भाग को पुनः एकभाग-बहुभाग करके बाँटते जाना ।

इतना विशेष है कि बध्यमान प्रकृतियों में ही द्रव्य देना है ।

जिसका विभाग बहुत है उसे द्रव्य अधिक देना ।

www.JainKosh.org

घादितियाणं सगसग-सव्वावरणीयसव्वदव्वं तु ।
उत्तकमेण य देयं, विवरीयं णामविग्घाणं ॥201॥

≈ अन्वयार्थ – (घादितियाणं) ज्ञानावरण, दर्शनावरण और मोहनीय – इन 3 घाति कर्मों का (सगसगसव्वावरणीयसव्वदव्वं तु) अपना-अपना सर्वघाति का सर्वद्रव्य (उत्तकमेण) क्रमशः आदि से अन्तपर्यंत (देयं) देना चाहिए।

≈ (णामविग्घाणं) नाम और अन्तराय का द्रव्य (विवरीयं) विपरीत क्रम से अर्थात् अन्त से आदिपर्यन्त देना चाहिए ॥201॥

www.JainKosh.org

उत्तर प्रकृतियों में किसका विभाग अधिक है?

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय

आदि प्रकृति से अंत प्रकृति तक

हीन-हीन क्रम

नाम, अन्तराय

आदि प्रकृति से अंत प्रकृति तक

अधिक-अधिक क्रम

www.JainKosh...

मतिज्ञानावरण में सर्वघाती का द्रव्य

सर्वघाती द्रव्य = कुल द्रव्य का अनंतवाँ भाग

$\frac{\text{सर्वघाती द्रव्य}}{\text{प्रतिभाग}}$ = एकभाग

शेष बहुभाग के समान 5 भाग करें और ज्ञानावरण की प्रत्येक प्रकृति में दें ।

शेष एकभाग को एकभाग, बहुभाग करते हुए क्रम-क्रम से बहुभाग मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मन:पर्ययज्ञानावरण को देना । अंतिम एकभाग केवलज्ञानावरण को देना ।

इस प्रकार सर्वघाती का द्रव्य मतिज्ञानावरण को मिलता है ।

मतिज्ञानावरण में देशघाती का द्रव्य

देशघाती द्रव्य = कुल द्रव्य का अनंत बहुभाग

$$\frac{\text{देशघाती द्रव्य}}{\text{प्रतिभाग}} = \text{एकभाग}$$

शेष बहुभाग के समान 4 विभाग करें और ज्ञानावरण की प्रत्येक देशघाती प्रकृति में दें ।

शेष एकभाग को पुनः एकभाग, बहुभाग करते हुए बहुभाग क्रमशः मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण में दें । अंतिम एक भाग मनःपर्यय ज्ञानावरण को दें ।

www.Jainkosh.org

उदाहरण

माना कि ज्ञानावरण का समयप्रबद्ध = 200000,

$\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} = 5$

अनंत = 8

≈सर्वघाती द्रव्य $= \frac{200000}{8} = 25000$

≈देशघाती द्रव्य $= \frac{200000}{8} \times (8 - 1) =$ 1,75,000

≈सर्वघाती द्रव्य का विभाग $= \frac{25000}{5} = 5000$ एकभाग

≈$\frac{\text{शेष बहुभाग}}{5} = \frac{20000}{5} = 4000$ (प्रत्येक प्रकृति में देय)

www.JainKosh.org

उदाहरण

माना कि ज्ञानावरण का समयप्रबद्ध = 200000,

$\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} = 5$

अनंत = 8

$\approx \frac{5000}{5} = 1000,$ बहुभाग = 4000 मतिज्ञानावरण में

$\approx \frac{1000}{5} = 200,$ बहुभाग 800 श्रुतज्ञानावरण में

$\approx \frac{200}{5} = 40,$ बहुभाग 160 अवधिज्ञानावरण में

$\approx \frac{40}{5} = 8,$ बहुभाग 32 मन:पर्ययज्ञानावरण में

≈शेष एक भाग 8 केवलज्ञानावरण में

www.JainKosh.org

ज्ञानावरण के सर्वघाती द्रव्य का बंटवारा

	मतिज्ञानावरण	श्रुतज्ञानावरण	अवधिज्ञानावरण	मन:पर्ययज्ञानावरण	केवलज्ञानावरण
समभाग	4000	4000	4000	4000	4000
प्रतिभाग	4000	800	160	32	8
कुल	8000	4800	4160	4032	4008

इसी प्रकार देशघाती द्रव्य बाँटिए । परन्तु अब मात्र 4 प्रकृतियों में द्रव्य देना है ।

ज्ञानावरण के देशघाती द्रव्य का बंटवारा

	मतिज्ञानावरण	श्रुतज्ञानावरण	अवधिज्ञानावरण	मन:पर्ययज्ञानावरण
समभाग	35000	35000	35000	35000
प्रतिभाग	28000	5600	1120	280
कुल	63000	40600	36120	35280

इस प्रकार मतिज्ञानावरण का कुल द्रव्य 8000 + 63000 = 71000 हुआ ।

www.JainKosh.org

दर्शनावरण कर्म में विभाग

सर्वघाती द्रव्य 9 प्रकृतियों में दिया जायेगा ।

देशघाती द्रव्य 3 प्रकृतियों में दिया जायेगा ।

प्रकृतियों का क्रम है —

स्त्यानगृद्धि, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, निद्रा, प्रचला, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण ।

www.JainKosh.org

अंतराय कर्म में विभाग

इसी प्रकार अंतराय में जानना ।

प्रकृतियों का क्रम है — वीर्यान्तराय, परिभोगान्तराय, भोगान्तराय, लाभान्तराय, दानान्तराय

एक-एक प्रकृति के कुल द्रव्य का अनंतवाँ भाग सर्वघाती होता है और अनंत बहुभाग द्रव्य देशघाती होता है ।

मोहे मिच्छत्तादी, सत्तरसण्हं तु दिज्जदे हीणं ।
संजलणाणं भागेव, होदि पणणोकसायाणं ॥202॥

≈अन्वयार्थ – (मोहे) मोहनीय कर्म में सर्वघाति द्रव्य (मिच्छत्तादी सत्तरसण्हं) मिथ्यात्वादि सर्वघाति 17 प्रकृतियों में (हीणं) हीनक्रम से (दिज्जदे) दिया जाता है ।

≈(संजलणाणं भागेव) संज्वलन कषाय को जो भाग प्राप्त हुआ है उसी में से (पणणोकसायाणं) पाँच नोकषायों का बँटवारा (होदि) प्राप्त होता है ॥202॥

मोहनीय में द्रव्य का विभाग

सर्वघाती द्रव्य को 16 कषाय, मिथ्यात्व और 5 नोकषाय में दिया जायेगा । देने का क्रम इस प्रकार है—

मिथ्यात्व → अनंतानु-बंधी — लोभ, माया, क्रोध, मान → संज्वलन — लोभ, माया, क्रोध, मान → प्रत्या-ख्यान — लोभ, माया, क्रोध, मान → अप्रत्या-ख्यान — लोभ, माया, क्रोध, मान → वेद, रति-अरति, हास्य-शोक, भय, जुगुप्सा

ainKos

नोकषायों में बँटवारा

चूंकि सारी नोकषाय एक साथ नहीं बंधती,
अत: बध्यमान में बँटवारा होगा ।

3 वेद में से	1
रति, अरति में से	1
हास्य, शोक में से	1
भय-जुगुप्सा — ध्रुव-बंधी	2
कुल	5

एकसाथ 5 से अधिक नोकषाय का बंध नहीं होता ।

www.JainKosh.org

संजलणभागबहुभागद्धं अकसायसंगयं दव्वं ।
इगिभागसहियबहुभागद्धं संजलणपडीबद्धं ॥203॥

≈अन्वयार्थ – (संजलणभागबहुभागद्धं) संज्वलन कषाय को जो सर्वघाति द्रव्य प्राप्त हुआ है उसका बहुभाग निकालकर उसमें से अर्धभाग प्रमाण (अकसायसंगयं दव्वं) नोकषाय संबंधी द्रव्य है और (इगिभागसहियबहुभागद्धं) शेष एकभागसहित बहुभाग का अर्धभागप्रमाण द्रव्य (संजलणपडिबद्धं) संज्वलन संबंधी है ॥203॥

www.JainKosh.org

सर्वघाती संज्वलन द्रव्य

सभी नोकषाय में भी सर्वघाती द्रव्य होता है क्योंकि उनका अनुभाग चतु-स्थानीय है। इसलिए सर्वघाती द्रव्य में से बध्यमान 5 नोकषाय को द्रव्य दिया जायेगा ।

यद्यपि टीका में उनके द्रव्य का बंटवारा नहीं दिया है, पर उसे दोनों द्रव्य प्राप्त होते हैं अतः उनका बंटवारा गाथा के अनुसार इस प्रकार कहना चाहिए ।

जो संज्वलन कषाय का सर्वघाती द्रव्य है, उसके इस प्रकार विभाग करने से नोकषाय का सर्वघाती द्रव्य प्राप्त होता है ।

www.JainKosh.org

मोहनीय का देशघाती द्रव्य

इस तरह संज्वलन का द्रव्य देशघाती द्रव्य के आधे से कुछ अधिक है तथा 5 नोकषाय का द्रव्य देशघाती द्रव्य के आधे से कुछ कम है ।

इसे पुनः बहुभाग, एकभाग आदि क्रम से बाँटना चाहिए ।

नोकषाय में द्रव्य देने का क्रम —

वेद, रति-अरति, हास्य-शोक, भय, जुगुप्सा

www.JainKosh.org

तण्णोकसायभागो, सबंधपणणोकसायपयडीसु ।
हीणकमो होदि तहा, देसे देसावरणदव्वं ॥204॥

≈अन्वयार्थ – (तण्णोकसायभागो) वह नोकषाय के हिस्से में आया हुआ द्रव्य (सबंधपणणोकसायपयडीसु) एक साथ बंधने वाली पाँच नोकषाय प्रकृतियों में (हीणकमो) हीनक्रम से (होदि) प्राप्त होता है।

≈(तहा) उसी प्रकार (देसावरणदव्वं) देशघाति द्रव्य (देसे) देशघाति प्रकृतियों में मिलता है ॥204॥

www.JainKosh.org

मोहनीय के देशघाती द्रव्य का विभाग

जहाँ जितनी प्रकृतियों का बंध होता है, वहाँ उतनी में ही विभाग करना ।

जैसे 9वें गुणस्थान के सवेद भाग में नोकषाय में से मात्र पुरुषवेद का ही बंध होता है । तो नोकषाय संबंधी सारा द्रव्य पुरुषवेद को मिलेगा ।

9वें गुणस्थान के दूसरे भाग में संज्वलन का ही बंध होता है, तो नोकषायों का कोई विभाग नहीं होता ।

इसी प्रकार अन्य कर्मों में भी जानना चाहिए ।

www.JainKosh.org

पुंबंधऽद्धा अंतोमुहुत्त इत्थिम्मि हस्सजुगले य ।
अरदिजुगे संखगुणा, णउंसगद्धा विसेसहिया ॥205॥

≈अन्वयार्थ – (पुंबंधद्धा) पुरुषवेद का निरन्तर बन्धकाल (अंतोमुहुत्त) अंतर्मुहूर्त है ।

≈उससे (इत्थिम्मि) स्त्रीवेद, (हस्सजुगल) हास्ययुगल (य) और (अरदिजुगे) अरतिद्विक का क्रम से (संखगुणा) संख्यातगुणा है ।

≈उससे (णउंसगद्धा) नपुंसकवेद का बंधकाल (विसेसहिया) कुछ अधिक है ॥205॥

www.JainKosh.org

निरन्तर बंधकाल

प्रकृति	काल	गुणकार
पुरुषवेद	अंतर्मुहूर्त × 2	स्तोक
स्त्रीवेद	अंतर्मुहूर्त × 4	संख्यात गुणा
हास्य-रति	अंतर्मुहूर्त × 16	संख्यात गुणा
अरति-शोक	अंतर्मुहूर्त × 32	संख्यात गुणा
नपुंसक वेद	अंतर्मुहूर्त × 42	विशेष अधिक

जिसका जितना बंध काल है, उसके अनुसार उसका सत्त्व द्रव्य है ।

अधिक बंधकाल, अधिक सत्त्व परमाणु। अल्प बंधकाल, अल्प सत्त्व परमाणु

पणविग्घे विवरीयं, सबंधपिंडिदरणामठाणे वि ।
पिंडं दव्वं च पुणो, सबंधसगपिंडपयडीसु ॥206॥

≈अन्वयार्थ - (पणविग्घे) अन्तराय कर्म की पाँच प्रकृतियों में (विवरीयं) विपरीत क्रम है ।

≈(सबंधपिंडिदरणामठाणे वि) नामकर्म के स्थानों में एक समय में बंध को प्राप्त होने वाली पिंड और अपिंडप्रकृतियों में भी विपरीत क्रम से प्राप्त होता है ।

≈(पुणो) पुनः (पिंडं दव्वं) पिंडद्रव्य (सबंधसगपिंडपयडीसु) एक साथ बंधने वाली अपनी पिंडप्रकृतियों में भी विपरीत क्रम से प्राप्त होता है ॥206॥

www.JainKosh.org

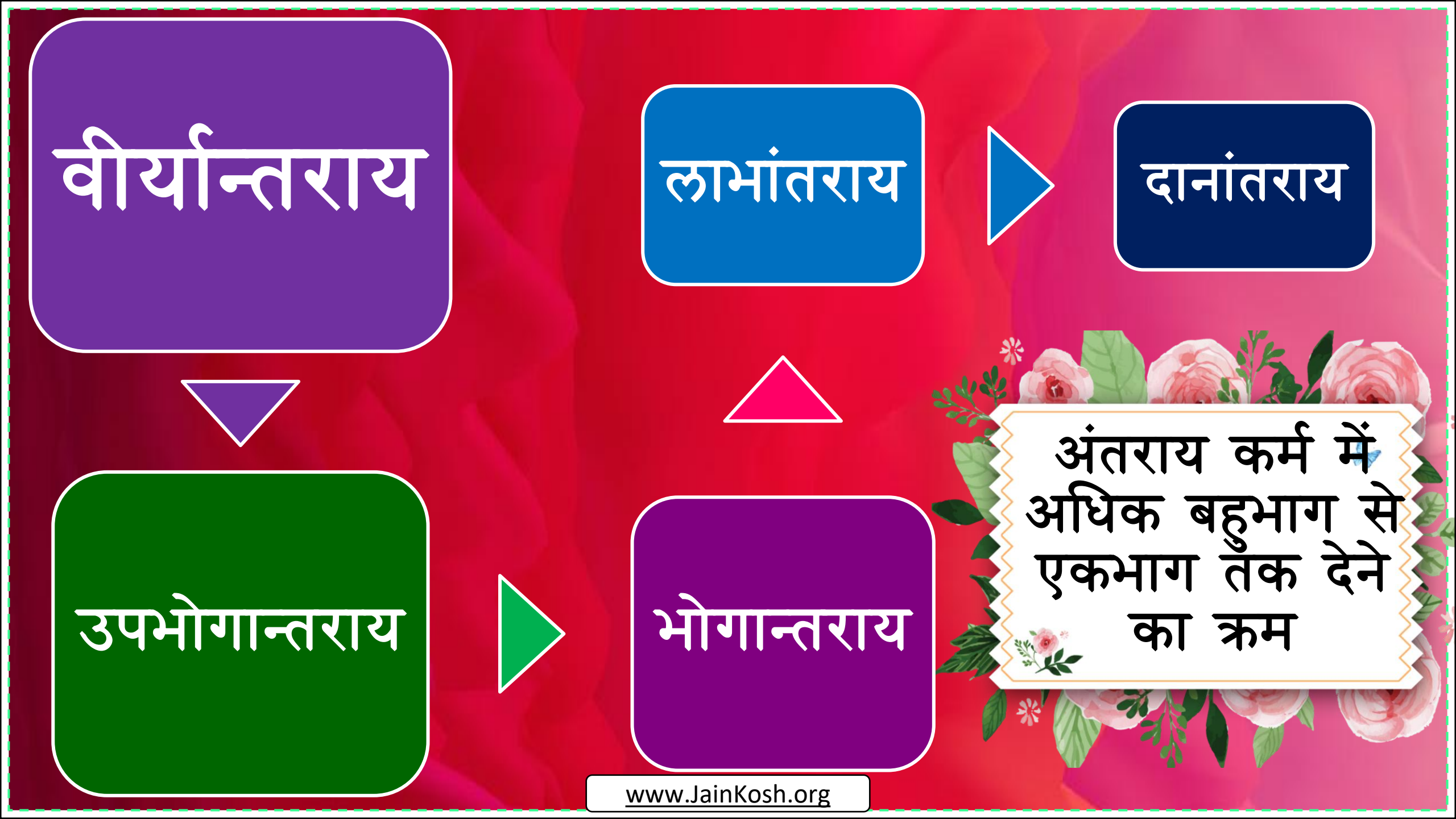

वीर्यान्तराय
लाभांतराय
दानांतराय
उपभोगान्तराय
भोगान्तराय
अंतराय कर्म में अधिक बहुभाग से एकभाग तक देने का क्रम
www.JainKosh.org

नामकर्म का देयक्रम (अधिक से हीन)

≈1. तीर्थंकर
≈2. निर्माण
≈3. यश-अयश
≈4. आदेय-अनादेय
≈5. सुस्वर-दुःस्वर
≈6. सुभग-दुर्भग
≈7. शुभ-अशुभ
≈8. स्थिर-अस्थिर
≈9. प्रत्येक-साधारण
≈10. पर्याप्त-अपर्याप्त
≈11. बादर-सूक्ष्म
≈12. त्रस-स्थावर
≈13. विहायोगति
≈14. उद्योत
≈15. आतप
≈16. उच्छ्वास
≈17. परघात
≈18. उपघात
≈19. अगुरुलघु
≈20. आनुपूर्वी
≈21. स्पर्श
≈22. रस
≈23. गंध
≈24. वर्ण
≈25. संहनन
≈26. अंगोपांग
≈27. संस्थान
≈28. शरीर
≈29. जाति
≈30. गति

w[redacted]g

नामकर्म में विभाग

जहाँ जितनी प्रकृतियों का बंध होता है, वहाँ-वहाँ ही उनका विभाग करना ।

पिण्ड प्रकृतियों में शरीर ही ऐसी प्रकृति है जिसमें युगपत् अनेक शरीरों का बंध होता है ।

इन सबका 1 पिण्ड मानकर जो शरीर नामकर्म का विभाग प्राप्त होगा, उसका पुनः बध्यमान शरीरों में बँटवारा प्रतिभाग के अनुसार होगा ।

बध्यमान शरीरों में बँटवारे का क्रम — कार्मण, तैजस, शेष 1 बध्यमान शरीर

छण्हंपि अणुक्कस्सो, पदेसबंधो दु चदुवियप्पो दु ।
सेसतिये दुवियप्पो, मोहाऊणं च दुवियप्पो ॥207॥

≈ अन्वयार्थ – (छण्हंपि) ज्ञानावरणादि छह कर्मों का (अणुक्कस्सो) अनुत्कृष्ट (पदेसबंधो दु) प्रदेशबन्ध (चदुवियप्पो दु) सादि आदि चार प्रकार का होता है ।

≈ (सेसतिये) शेष उत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य प्रदेशबन्ध में (दुवियप्पो) सादि और अध्रुवरूप दो भेद हैं ।

≈ (मोहाऊणं) मोहनीय और आयुकर्म के उत्कृष्टादि चारों बन्ध (दुवियप्पो) सादि और अध्रुव इन दो प्रकार के ही हैं ॥207॥

मूल प्रकृतियों का उत्कृष्ट आदि प्रदेशबंध

	जघन्य	अजघन्य	उत्कृष्ट	अनुत्कृष्ट
ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, नाम, गोत्र, अन्तराय	2	2	2	4
मोहनीय, आयु	2	2	2	2

www.JainKosh.org

उत्कृष्ट आदि बंध

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, नाम, गोत्र, अन्तराय — इन 6 कर्मों का उत्कृष्ट बंध सूक्ष्म-सांपराय गुणस्थान में होता है इसलिए इनका अनुत्कृष्ट प्रदेश-बंध चार प्रकार का हो जाता है ।

मोहनीय का उत्कृष्ट प्रदेश-बंध एक से नौवे गुणस्थान तक किसी में भी हो सकता है इसलिए उसके अनुत्कृष्ट प्रदेश-बंध के दो ही प्रकार होते हैं, चार नहीं ।

आयु का बंध निरंतर होता ही नहीं, अतः उसके चारों प्रकार के बंध दो ही प्रकार के होते हैं ।

सभी कर्मों के जघन्य बंध 2 प्रकार के ही होने से अजघन्य बंध के 2 ही प्रकार होते हैं ।

तीसण्हमणुक्कस्सो, उत्तरपयडीसु चउविहो बंधो ।
सेसतिये दुवियप्पो, सेसचउक्केवि दुवियप्पो ॥208॥

≈अन्वयार्थ – (उत्तरपयडीसु) उत्तर प्रकृतियों में (तीसण्हं) 30 प्रकृतियों का (अणुक्कस्सो बंधो) अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध (चउविहो) सादि आदि चार प्रकार का है ।

≈(सेसतिये) शेष उत्कृष्ट, अजघन्य और जघन्य प्रदेशबन्ध (दुवियप्पो) सादि और अध्रुव इस प्रकार दो प्रकार का है।

≈(सेसचउक्केवि) शेष 90 प्रकृतियों का उत्कृष्टादि चारों प्रकार का प्रदेशबन्ध (दुवियप्पो) सादि और अध्रुव इन दो प्रकार का ही है ॥208॥

उत्तर प्रकृतियों का उत्कृष्ट आदि प्रदेशबंध

	जघन्य	अजघन्य	उत्कृष्ट	अनुत्कृष्ट
30 प्रकृति	2	2	2	4
90 प्रकृति	2	2	2	2

णाणंतरायदसयं, दंसणछक्कं च मोहचोद्दसयं ।
तीसण्हमणुक्कस्सो, पदेसबंधो चदुवियप्पो ॥209॥

≈अन्वयार्थ – (णाणंतरायदसयं) 5 ज्ञानावरण, 5 अंतराय (दंसणछक्कं) निद्रा, प्रचला, चक्षु, अचक्षु, अवधि और केवलदर्शनावरण – ये दर्शनावरण की 6 प्रकृतियाँ और (मोह चोद्दसयं) मोहनीय कर्म की 14 प्रकृतियाँ (अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण, संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ और भय, जुगुप्सा) (तीसण्हं) इन 30 प्रकृतियों का (अणुक्कस्सो) अनुत्कृष्ट (पदेसबंधो) प्रदेशबंध (चदुवियप्पो) सादि आदि चार प्रकार का है ॥209॥

www.JainKosh.org

30 प्रकृतिया जिनका अनुत्कृष्ट प्रदेश बंध 4 प्रकार का है

ज्ञानावरण - 5	अन्तराय - 5	दर्शनावरण - 4	निद्रा, प्रचला - 2
अप्रत्याख्यान - 4	प्रत्याख्यान - 4	संज्वलन - 4	भय-जुगुप्सा

इन 30 प्रकृतियों का उत्कृष्ट प्रदेश-बंध गुणस्थान-विशिष्ट में होता है। इसलिए इनका अनुत्कृष्ट प्रदेश-बंध चार प्रकार का होता है।

उक्कडजोगो सण्णी, पज्जत्तो पयडिबंधमप्पदरो ।
कुणदि पदेसुक्कस्सं, जहण्णये जाण विवरीयं ॥210॥

≈अन्वयार्थ – जो जीव (उक्कडजोगो) उत्कृष्ट योगों से सहित हो, (सण्णी) संज्ञी, (पज्जत्तो) पर्याप्त, (पयडिबंधमप्पदरो) जो अल्प प्रकृतियों का बंधक होता है, वही जीव (पदेसुक्कस्सं) उत्कृष्ट प्रदेशबन्ध को (कुणदि) करता है तथा (जहण्णये) जघन्य प्रदेशबन्ध में इससे (विवरीयं) विपरीत (जाण) जानना ॥210॥

www.JainKosh.org

उत्कृष्ट प्रदेशबंध की सामग्री

1) उत्कृष्ट योग	• जब उत्कृष्ट योग होता है, तब बड़ा समयप्रबद्ध बंधता है । फलत: प्रदेशबंध बढ़ता है ।
2) संज्ञी	• संज्ञी जीवों के ही उत्कृष्ट प्रदेशबंध संभव है क्योंकि उन्हीं के उत्कृष्ट योग संभव है ।
3) पर्याप्त	• पर्याप्त जीव के ही उत्कृष्ट प्रदेशबंध संभव है ।
4) अल्प प्रकृति बंध	• जब अल्प प्रकृतिया बंधेगी, तब द्रव्य का विभाग कम प्रकृतियों में होगा । तब उस प्रकृति का प्रदेशबंध अधिक पाया जायेगा ।

जघन्य प्रदेशबंध के लिए इससे विपरीत सामग्री चाहिए

1) जघन्य योग

2) असंज्ञी

3) अपर्याप्त

4) अधिक प्रकृतियों का बंध

www.JainKosh.org

आउक्कस्सपदेसं, छक्कं मोहस्स णव दु ठाणाणि ।
सेसाणं तणुकसाओ, बंधदि उक्कस्सजोगेण ॥211॥

≈ अन्वयार्थ – (आउक्कस्सपदेसं) आयुकर्म का उत्कृष्ट प्रदेशबन्ध (छक्कं) तृतीय गुणस्थान को छोड़कर छह गुणस्थानवर्ती बांधते हैं ।

≈ (मोहस्स) मोहनीय का उत्कृष्ट प्रदेशबन्ध (णव दु ठाणाणि) नौ गुणस्थानवर्ती करते हैं ।

≈ (सेसाणं) शेष कर्मों का उत्कृष्ट प्रदेशबन्ध (तणुकसाओ) सूक्ष्म-सांपराय गुणस्थानवर्ती जीव (उक्कस्सजोगेण) उत्कृष्ट योग से (बंधदि) बांधता है ॥211॥

www.JainKosh.org

उत्कृष्ट प्रदेशबंध का स्वामी

मूल कर्म	स्वामी (गुणस्थान)
आयु कर्म	1, 2, 4, 5, 6, 7 क्योंकि इन सभी गुणस्थानों में आवश्यक सामग्री उपलब्ध है ।
मोहनीय कर्म	मिथ्यात्व से अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ती क्योंकि इन सभी गुणस्थानों में आवश्यक सामग्री उपलब्ध है । जब 7 कर्मों का बंध करता है तब अन्य आवश्यक सामग्री के साथ मोहनीय का उत्कृष्ट बंध होता है ।
शेष 6 कर्म	सूक्ष्म सांपरायवर्ती क्योंकि यहाँ 6 प्रकृतियों का ही बंध होता है । जिससे प्रत्येक मूल प्रकृति को अन्यत्र से यहाँ द्रव्य अधिक मिलता है ।

नोट— इन स्थानों पर सभी को उत्कृष्ट प्रदेशबंध होता ही है — ऐसा नहीं है ।
जब इन स्थानों पर उत्कृष्ट योग से परिणमित होता है, तब उत्कृष्ट प्रदेशबंध होता है ।

सत्तर सुहुमसरागे, पंचऽणियट्टिम्मि देसगे तदियं ।
अयदे विदियकसायं, होदि हु उक्कस्सदव्वं तु ॥212॥

≈अन्वयार्थ – (सत्तर) 5 ज्ञानावरण, 4 दर्शनावरण, 5 अन्तराय, यशः कीर्ति, उच्च गोत्र, सातावेदनीय – इन 17 प्रकृतियों का उत्कृष्ट प्रदेशबन्ध (सुहुमसरागे) सूक्ष्म साम्पराय में होता है।

≈(पंच) पुरुष वेद और चार संज्वलन कषाय – इन पाँच प्रकृतियों का (अणियट्टिम्मि) अनिवृत्तिकरण में

≈(तदियं) तीसरी प्रत्याख्यान कषायों का (देसगे) देशसंयत गुणस्थान में

≈(विदियकसायं) दूसरी अप्रत्याख्यान कषायों का (अयदे) असंयत गुणस्थान में (उक्कस्सदव्वं) उत्कृष्ट द्रव्य (होदि) होता है ॥212॥

उत्तर प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध के स्वामी

प्रकृतियाँ	स्वामी
सूक्ष्म-सांपराय में बध्यमान 17 प्रकृतिया	सूक्ष्मसांपराय गुणस्थानवर्ती क्योंकि यहाँ सबसे कम प्रकृतियों का बंध है अतः एक-एक को अधिक विभाग मिलेगा ।
4 संज्वलन, 1 पुरुषवेद	अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ती क्योंकि यहाँ मोहनीय की सबसे कम प्रकृतियों का बंध है अतः प्रत्येक को द्रव्य अधिक मिलेगा ।
4 प्रत्याख्यानावरण	देशसंयत गुणस्थानवर्ती क्योंकि यहाँ 16 कषायों की बजाय 8 कषायों में ही द्रव्य विभाजित होता है ।
4 अप्रत्याख्यानावरण	अविरत सम्यग्दृष्टि क्योंकि यहाँ 16 कषायों की बजाय 12 कषायों में ही द्रव्य विभाजित होता है ।

www.jainkosh.org

छण्णोकसायणिद्दा-पयलातित्थं च सम्मगो य जदी ।
सम्मो वामो तेरं, णरसुरआऊ असादं तु ॥213 ॥
देवचउक्कं वज्जं, समचउरं सत्थगमणसुभगतियं ।
आहारमप्पमत्तो, सेसपदेसुक्कडो मिच्छो ॥214॥

≈अन्वयार्थ – (छण्णोकसायणिद्दापयलातित्थं) छह नोकषाय, निद्रा, प्रचला और तीर्थंकर का उत्कृष्ट प्रदेशबन्ध (सम्मगो य) सम्यग्दृष्टि करता है ।

≈(णरसुरआऊ असादं देवचउक्कं वज्जं समचउरं सत्थगमणसुभगतिय) मनुष्यायु, देवायु, असाता वेदनीय, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक अंगोपांग, वज्रऋषभनाराच संहनन, समचतुरस्र संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय (तेरं) इन 13 प्रकृतियों का उत्कृष्ट प्रदेशबन्ध (सम्मो वामो) सम्यग्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि करता है ।

≈(आहारं) आहारक-द्विक का उत्कृष्ट प्रदेशबन्ध (अप्पमत्तो) अप्रमत्त जीव करता है।

≈(सेसपदेसुक्कडो) शेष 66 प्रकृतियों का उत्कृष्ट प्रदेशबन्ध (मिच्छो) मिथ्यादृष्टि जीव करता है ॥213-214॥

www.JainKosh.org

उत्तर प्रकृतियों के उत्कृष्ट प्रदेशबंध के स्वामी

प्रकृतियाँ	स्वामी
6 नोकषाय, तीर्थंकर	सम्यग्दृष्टि
निद्रा, प्रचला	सम्यग्दृष्टि क्योंकि 9वें भाग के स्थान पर 6ठा भाग मिलता है ।
मनुष्यायु, देवायु, असाता वेदनीय, देव-4, वज्रऋषभनाराच, समचतुरस्र, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय	सम्यग्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि
आहारक-2	अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती क्योंकि यहाँ ही इसका बंध है ।
शेष 66 प्रकृतिया	मिथ्यादृष्टि

www.JainKosh.org

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स पढमे जहण्णए जोगे ।
सत्तण्हं तु जहण्णं, आउगबंधेवि आउस्स ॥215॥

≈ अन्वयार्थ – (सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्य) सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तक जीव (पढमे) अपने भव के प्रथम समय में (जहण्णए जोगे) जघन्य उपपाद योग में (सत्तण्हं तु) आयु के बिना सात मूल प्रकृतियों का (जहण्णं) जघन्य प्रदेशबन्ध करता है।

≈ (आउगबंधेवि) पश्चात् आयु का बंध होने पर वही जीव (आउस्स) आयु का भी जघन्य प्रदेश-बन्ध करता है ॥215॥

www.JainKosh.org

जघन्य प्रदेश बंध

सबसे जघन्य योग सूक्ष्म निगोदिया लब्धि-अपर्याप्त के पर्याय धारण करने के प्रथम समय में होता है । (उपपाद योग के समय)

अत: यहाँ बध्यमान प्रकृतियों का जघन्य बंध यहीं होता है ।

भव के प्रथम समय में 7 कर्मों का बंध होता है, आयु का नहीं । अत: यहाँ 7 कर्मों का जघन्य बंध जानना ।

जब सूक्ष्म निगोदिया लब्धि-अपर्याप्त जीव आयु बांधता है, जघन्य योग सहित होता है, तब आयु का जघन्य प्रदेश बंध होता है ।

नोट- यदि जघन्य योग से परिणमेगा, तभी जघन्य बंध होगा । प्रथम समय में संभव उपपाद योग असंख्यात प्रकार का है । उनमें से जघन्य योग होने पर ही उपर्युक्त अवस्था में जघन्य बंध होता है।

घोडणजोगोऽसण्णी, णिरयदुसुरणिरय आउगजहण्णं ।
अपमत्तो आहारं, अयदो तित्थं च देवचऊ ॥216॥

≈अन्वयार्थ – (घोडणजोगो) घोटमान योगों का धारक (असण्णी) असंज्ञी जीव (णिरयदु-सुरणिरय आउग जहण्णं) नरकद्विक, देवायु और नरकायु का जघन्य प्रदेशबन्ध करता है।

≈(अपमत्तो) अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीव (आहारं) आहारक-द्विक का जघन्य प्रदेशबन्ध करता है।

≈(अयदो) असंयत गुणस्थानवर्ती जीव (तित्थं च देवचऊ) तीर्थंकर और देवचतुष्क का जघन्य प्रदेशबन्ध करता है ॥216॥

उत्तर प्रकृतियों के जघन्य प्रदेश बंध का स्वामी

प्रकृति	स्वामी
नरक-2, नरकायु, देवायु	परिणाम योगस्थानवर्ती असंज्ञी जीव । क्योंकि असंज्ञी जीव के योग संज्ञी जीव से अल्प होते हैं ।
आहारक-2	अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती क्योंकि यहीं इसका बंध है ।
देव-चतुष्क, तीर्थंकर	भवधारण के प्रथम समय असंयत सम्यग्दृष्टि क्योंकि यहाँ उपपाद योग है

चरिमअपुण्णभवत्थो, तिविग्गहे पढमविग्गहम्मि ठिओ ।
सुहुमणिगोदो बंधदि, सेसाणं अवरबंधं तु ॥217॥

≈अन्वयार्थ – (चरिम अपुण्णभवत्थो) 6012 क्षुद्रभवों में से अन्तिम क्षुद्रभव में स्थित (तिविग्गहे) विग्रहगति के तीन मोड़ों में से (पढमविग्गहम्मि ठियो) प्रथम मोड़े में स्थित (सुहुमणिगोदो) सूक्ष्म निगोदिया जीव (सेसाणं) शेष 109 प्रकृतियों का (अवरबंधं तु) जघन्य प्रदेशबन्ध (बंधदि) करता है ॥217॥

www.JainKosh.org

शेष 109 उत्तर प्रकृतियों के जघन्य प्रदेश-बंध का स्वामी

जो सूक्ष्म निगोदिया लब्धि-अपर्याप्त है –

6012 क्षुद्रभवों में से अंतिम भव में स्थित

विग्रहगति के 3 मोड़ों में से प्रथम मोड़े में स्थित

जघन्य योगधारी

अल्पतम प्रकृतिया बांधने वाला

ऐसा जीव इन प्रकृतियों का जघन्य प्रदेश बंध करता है । अन्य स्थितियों में मध्यम प्रदेश बंध पाया जायेगा ।